## विचार बिन्दु

जब पैसा बोलता है तब सत्य मौन रहता है। –कहावत

# पोरबंदर में शराब की दुकान : भारत बदल रहा है

भारत बदल रहा है। यह बदलाव हर तरफ नजर आता है। भारत की विशाल आबादी एक बड़ा बाज़ार बन गई है। यह देश दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में तेजी से आगे बढ़ रहा है। यह सब श्वेत-श्याम सिनेमा से निकल कर रंगीन सिनेमा के युग में जाने की तरह है जिसमें सिर्फ खूबसूरत और रंगीन मनोरंजन दिखाना होता है। अब सरकारें डिजिटल इंफ्लुएंसरों से मनभावन रीलें बनवा कर यह काम करवा रही हे हैं। यह प्रचार पर्यटकों को लुभाने के लिये बनाये जाने वाले रंगीन ब्रोशरों जैसा है, जो जमीनी हक़ीकत से दूर होते हैं। सरकारी दफ्तरों की हम पांच-तारा होटलों जैसी इमारतें बनती पाते हैं जिनमें बाबुओं को अनेक छुट्टियों के बीच के थोड़े से कार्यदिवसों में सिर्फ फ़ाइलें निबटाने के लिये दिन में 10 से पांच बजे तक बैठना होता है, वह भी उनकी मर्जी हो तब। सरकारी स्कूलों का ऐसा भाग्य नहीं है कि उनकी जर्जर इमारतें सुधरे। प्रगति और विकास की ऐसी आभासी दौड़ में यह सवाल पूछे जाने का यही सही वक़्त है कि भारत की सभ्यतागत पहचान का क्या हो रहा है? मौजूदा सरकार जिस विचारधारा से पोषित होकर आई है वह भारतीय सभ्यता और संस्कृति की बड़ी-बड़ी बातें करते नहीं अघाती। किन्तु उसके स्वयंसेवक भी इस आभासी विकास के प्रपंच में ही अपने को चमकाने का प्रयास करते नजर आते हैं। उस विचारधारा के पुरोधा महात्मा गांधी से हमेशा असहमत रहे लेकिन शासन में आने के बाद उन्हें समझ में आया कि भारत को कितना भी बदलने की कोशिश हो यहां गांधी का सत्य हमेशा उपस्थित रहेगा। ऐसे बौद्धिक विचारक जो गांधी को राष्ट्रिपता मानने से इनकार करते रहे हैं, अब दिखावे के लिये उन्हें देश के महापुरुषों की पांत में रखने को तैयार हो रहे हैं। सरकार की प्रचार तस्वीरों में गांधी का चश्मा, और लाठी लिये जा रहे महात्मा की पीठ की आकृति की उपस्थिति यही कुछ कहती है। किन्तु यह सब आभासी है। नया शासन तंत्र वे सारे उपाय कर रहा है जिससे महात्मा गांधी की सत्य की सनातन विरासत ध्वस्त की जा सके। इसका सबसे नया प्रयास गुजरात के पोरबंदर में शराब की दुकान खोलना है। पोरबंदर महात्मा गांधी का जन्म स्थान है जिसके प्रति करोड़ों भारतीय तीर्थ स्थल का सा भाव रखते हैं। इस शहर में पहली बार एक शराब की दुकान खुल रही है, जहां सरकारी परमिट-धारक शराब ख़रीद सकेंगे। पोरबंदर के एक होटल की शराब की दुकान के लिये एक अर्ज़ी को गुजरात सरकार ने मंज़ूरी दे दी है। गुजरात में शराबबंदी का 1949 ककक क़ानून लागू है, जिसके मुताबिक राज्य में शराब का उत्पादन, बिक्री, ख़रीद, भंडारण, परिवहन और सेवन प्रतिबंधित है। गुजरात मध्यनिषेध कानून की धारा 11 और 12 के अनुसार शराब की बिक्री या सेवन केवल क़ानूनी अनुमति के आधार पर ही की जा सकती है। इस मंज़ूरी के बाद पोरबंदर ज़िले में रहने वाले और शराब का परमिट रखने वाले लोग वहां होटल की दूकान से दारू ख़रीद सकेंगे। कुछ लोग इसे रूटीन प्रक्रिया बता रहे हैं। मगर ऐसा है नहीं। इसके निहितार्थ है। गुजरात के कुछ शहरों में शराब की परमिट क़ानूनी दुकानें पहले से हैं, जो आमतौर पर किसी होटल में होती है, जहां सिर्फ़ वैध परमिट रखने वाले लोगों को ही शराब बेची जा सकती है। बताते हैं कि पोरबंदर ज़िले में करीब 1500 परमिट-धारक हैं। ये सभी लोग अब तक जूनागढ़, जामनगर और मोरबी जैसे शहरों में जाते थे। अब उन्हें अपने परमिट के आधार पर क़ानूनी शराब लेने के लिए इतनी दूर नहीं जाना पड़ेगा, उन्हें यहीं उपलब्ध हो जाएगी। सरकार ने यह जनहित का काम किया है ताकि लोगों को दारू लेने के लिये दूर न जाना पड़े।

एक सरकारी अधिकारी का कहना है कि–"हमारे पास सिर्फ़ दो अर्ज़ियां आई हैं, जिनमें से एक को मंज़ूरी मिल चुकी है और दूसरी अभी कलेक्टर कार्यालय में विचाराधीन है। अर्थात अब पोरबंदर में शराब की दूसरी दूकान खोलने की राह प्रशस्त हो गई है। राजनीति को पवित्र बनाने और भारतीय सभ्यता के सनातन मूल्यों को बचाने की अथक मुहिम चलाने वाले उस महापुरुष की, जिसे आज दुनिया नमन करती है, जन्मभूमि पर शराब बेचने की इजाजत मिलना चौकाता है। सवाल यह भी उठता है कि पोरबंदर में इतने लोगों को परमिट को क्यों जारी किए गए। परमिट इस आधार पर दिए जाते हैं कि परमिट मांगने वाले को दारू की इतनी लत लग गई है कि वह उसके बिना मर जाएगा। इस सवाल में यह सवाल भी उठता है कि जब पोरबंदर में शराब उपलब्ध ही नहीं है तो उसने कहां से शराब पीकर लत लगाई और अब डाक्टरी सर्टिफिकेट लेकर आया है। यह दलील कि विदेशी पर्यटकों के आतिथ्य के लिये इस दुकान की आवश्यकता है इसलिये अनुचित है कि विदेशी पर्यटक ऐसे लोग नहीं होते जो गांधी के जन्मस्थान पर शराब पीने आना चाहें। वे भारत के उस सभ्यतागत जीवन को देखने आते हैं जिसे बचाने का बापू ने प्रयास किया।"

**शराब से मिलने वाला राजस्व शिक्षा और जनहित में खर्च होता है, के तर्क पर गांधी ने इसे पाप की कमाई बताया था। उनका कहना था कि शराब से होने वाली आय गरीब के घर को उजाड़कर आती है। ऐसी शिक्षा या विकास का कोई मूल्य नहीं जो लोगों के नैतिक पतन की नींव पर खड़ा हो। उनका मानना था कि शराब का सबसे बुरा प्रभाव घर की महिलाओं और बच्चों पर पड़ता है।**

इसीलिए कहा जा रहा है कि शासन को कम से कम पोरबंदर को तो छोड़ देना चाहिए था। गांधी विचारधारा के प्रति दुनिया भर में सम्मान है, और भारत की पहचान है। ऐसे में उनके जन्मस्थान को तो अलग रखा जा सकता था। महात्मा गांधी की जन्मस्थली में शराब की दुकान खोलने का विचार न केवल कानूनी रूप से जटिल है, बल्कि यह गहरे नैतिक और सांस्कृतिक द्वंद्व भी पैदा करता है। चूंकि गुजरात एक ड्राई स्टेट (शुष्क राज्य) है, इसलिए इस मुद्दे के नैतिक आयाम जुड़ जाते हैं। यह गांधी के विचारों का अपमान है। वे शराब और नशीले पदार्थों के कट्टर विरोधी थे। उनके लिए शराब केवल एक बुराई नहीं थी, बल्कि आत्मा और शरीर का विनाश करने वाला तत्व थी। उनके जन्मस्थान पर शराब की अनुमति देना उनके अहिंसा और आत्म-शुद्धि के दर्शन के सीधे विरोधाभास के रूप में देखा जा सकता है। सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पवित्रता की भी बात है। पोरबंदर को गांधी जी की स्मृति के कारण एक पवित्र स्थान माना जाता है। यहां शराब की मौजूदगी उस आध्यात्मिक वातावरण को प्रभावित करती है जो दुनिया भर से आने वाले पर्यटकों और अनुयायियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह स्थानीय निवासियों की धार्मिक और सांस्कृतिक भावनाओं को भी ठेस पहुंचाती है। सामाजिक उत्तरदायित्व बनाम राजस्व की बात भी अनेक लोग सामने लाते हैं। शराब से होने वाले राजस्व की सबसे बड़ी हिमायती भाजपा की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे भी रही हैं जो पूर्ण शराबबंदी के विरोध में राजस्व का ही तर्क देती थी। यहां एक बड़ा नैतिक प्रश्न यह उठता है कि क्या राज्य का आर्थिक लाभ (राजस्व) सामाजिक कल्याण से ऊपर है? कहा जाता है कि शराब से मिलने वाला टैक्स विकास कार्यों में मदद करता है। मगर नैतिक समस्या यह है कि जैसा गांधी का मानना था कि–"शराब की कमाई से मिलने वाला राजस्व पाप की कमाई है," क्योंकि यह गरीब परिवारों को और अधिक गरीबी और घरेलू हिंसा की ओर धकेलता है। यदि सरकार एक तरफ गांधी जयंती पर नशामुक्ति की कसमें खाती है और दूसरी तरफ उनके जन्मस्थान पर ही शराब को बढ़ावा देती है, तो यह नैतिक पाखंड ही माना जाएगा। इससे प्रशासन की विश्वसनीयता और मूल्यों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता पर सवाल उठता है। पोरबंदर में शराब की दुकान खोलना केवल एक प्रशासनिक निर्णय नहीं, बल्कि मूल्यों का चुनाव है। यह आर्थिक लाभ और विरासत के संरक्षण के बीच एक सीधा संघर्ष है।

बापू के लिए नशामुक्ति केवल एक सामाजिक सुधार नहीं, बल्कि स्वराज्य की नींव थी। उनका मानना था कि जब तक व्यक्ति अपनी इंद्रियों और व्यसनों पर विजय प्राप्त नहीं करता, वह वास्तविक स्वतंत्रता का आनंद नहीं ले सकता। गांधी ने स्पष्ट रूप से कहा था कि यदि उन्हें एक दिन के लिए भारत का तानाशाह बना दिया जाए, तो वह सबसे पहले बिना मुआवजे के शराब की सभी दुकानें बंद कर देंगे। वे शराब को चोरी या व्यभिचार से भी बुरा मानते थे, क्योंकि यह मनुष्य को पशु बना देती है।" शराब से मिलने वाला राजस्व शिक्षा और जनहित में खर्च होता है, के तर्क पर गांधी ने इसे पाप की कमाई बताया था। उनका कहना था कि शराब से होने वाली आय गरीब के घर को उजाड़कर आती है। ऐसी शिक्षा या विकास का कोई मूल्य नहीं जो लोगों के नैतिक पतन की नींव पर खड़ा हो। उनका मानना था कि शराब का सबसे बुरा प्रभाव घर की महिलाओं और बच्चों पर पड़ता है। उन्होंने पोरबंदर और पूरे देश की महिलाओं से शराब की दुकानों के बाहर शांतिपूर्ण धरना देने का आव्हान किया था। भारतीय संविधान में भी मद्यनिषेध का उल्लेख राज्य के नीति निदेशक तत्वों में किया गया है। यह विशेष रूप से अनुच्छेद 47 में वर्णित है जो कहता है कि राज्य का कर्तव्य है कि वह लोगों के पोषण स्तर और जन-स्वास्थ्य को सुधारने का प्रयास करे। साथ ही, राज्य को यह भी प्रयास करना चाहिए कि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नशीले पदार्थों (जैसे शराब) के सेवन को प्रतिबंधित (मद्यिनषेध) किया जाए। सरल भाषा में कहें तो संविधान यह निर्देशित करता है कि सरकार का लक्ष्य होना चाहिए कि लोगों की सेहत बेहतर हो, जिसके लिये शराब और अन्य हानिकारक नशे को कम या बंद किया जाए। हालांकि संविधान का यह निर्देश कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं है, लेकिन यह राज्य के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत है।

**–अतिथि संपादक,**
**राजेन्द्र बोड़ा**
**(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)**

# नए भारत की निर्णायक : नारी शक्ति

राखी राठौड़

भारतीय परंपरा में नारी को सदैव शक्ति का स्वरूप माना गया है – यज्ञवेदी की शोभा, संस्कारों की संरक्षिका और समाज की धुरी। 21वीं सदी का भारत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक ऐसे परिवर्तन काल से गुजर रहा है, जहाँ नारी केवल प्रतीक नहीं, बल्कि निर्णय लेने वाली सशक्त भागीदार बन रही है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम इसी परिवर्तन का संवैधानिक रूप है। यह केवल संसद और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान नहीं, बल्कि भारत की आधी आबादी को नीति-निर्माण की पहली पंक्ति में स्थापित करने का ऐतिहासिक प्रयास है।

आज भारत में महिलाओं की स्थिति एक स्पष्ट विरोधाभास प्रस्तुत करती है। एक ओर महिलाएं शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं और कौशल के क्षेत्र में निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर नेतृत्व के शीर्ष पदों पर उनकी उपस्थिति अभी भी सीमित है। देश में महिला श्रम भागीदारी दर हाल के वर्षों में बढ़कर लगभग 40 प्रतिशत के आसपास पहुंची है, परंतु संगठित क्षेत्र में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग एक-चौथाई के आसपास ही सिमटी हुई है। शीर्ष प्रबंधन स्तर पर यह संख्या और घट जाती है। कंपनियों के उच्चतम निर्णयकारी पदों – जैसे मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मुख्य वित्त अधिकारी, मुख्य परिचालन अधिकारी आदि – को सामूहिक रूप से सी-सूट कहा जाता है। हिंदी में इसे उच्चतम कार्यकारी नेतृत्व स्तर कहा जा सकता है। इस स्तर पर महिलाओं की भागीदारी लगभग 10-13 प्रतिशत के बीच सिमटी हुई है।

कंपनी बोर्डों में महिलाओं की हिस्सेदारी भी सीमित है, और बैंकिंग तथा वित्तीय संस्थानों में कार्यबल में उनकी उपस्थिति अपेक्षाकृत बेहतर होने के बावजूद नेतृत्व में उनका प्रतिशत काफी कम रह जाता है। ये आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि समस्या महिलाओं की क्षमता में नहीं, बल्कि नेतृत्व तक पहुँचने के अवसरों और संरचनात्मक बाधाओं में है। महिलाओं के करियर में एक प्रमुख चुनौती वह स्थिति है, जिसे अक्सर टूटी हुई सीढ़ी कहा जाता है। इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे पद ऊँचा होता है, महिलाओं की संख्या तेजी से घटती जाती है।

प्रारंभिक स्तर पर उनकी भागीदारी अपेक्षाकृत अधिक होती है, लेकिन मध्य और शीर्ष प्रबंधन तक पहुँचते-पहुँचते यह संख्या काफी कम हो जाती है। परिणामस्वरूप, निर्णय लेने वाली भूमिकाओं में उनकी उपस्थिति सीमित रह जाती है। यह केवल रोजगार का प्रश्न नहीं, बल्कि निर्णय प्रक्रिया में संतुलन और विविधता का प्रश्न है। जब निर्णय लेने वाले पदों पर महिलाओं की भागीदारी कम होती है, तो नीतियों और संस्थागत दृष्टिकोण में उनका अनुभव और संवेदनशीलता भी पर्याप्त रूप से परिलक्षित नहीं हो पाती।

ऐसे परिदृश्य में महिला आरक्षण एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में देखा जा सकता है। यह केवल राजनीतिक प्रतिनिधित्व बढ़ाने का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक और मानसिक परिवर्तन की दिशा में एक निर्णायक कदम है। जब संसद और विधानसभाओं में बड़ी संख्या में महिलाएं सक्रिय भूमिका निभाएंगी, तो यह समाज के सामने नए नेतृत्व के उदाहरण प्रस्तुत करेगा। इससे महिलाओं के प्रति विश्वास बढ़ेगा और उनके भीतर नेतृत्व के प्रति आत्मविश्वास विकसित होगा। यह बदलाव केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना में परिवर्तन का आधार बनेगा। राजस्थान की धरती नारी शक्ति के अद्भुत उदाहरणों से समृद्ध रही है– पन्ना धाय का त्याग, मीराबाई की भक्ति और कालीबाई का साहस आज भी प्रेरणा देते हैं।

फिर भी वर्तमान में राजस्थान विधानसभा में महिलाओं की भागीदारी लगभग 10-11 प्रतिशत के आसपास है। महिला आरक्षण लागू होने के बाद यह संख्या कई गुना तक बढ़ सकती है।

यह परिवर्तन केवल संख्या का नहीं, बल्कि दृष्टिकोण का होगा। जब गांव और शहरों की बेटियां अपने आसपास महिलाओं को नीति-निर्माण करते हुए देखेंगी, तो उनके भीतर भी नेतृत्व का आत्मविश्वास विकसित होगा। महिला आरक्षण का प्रभाव केवल संसद और विधानसभा तक सीमित नहीं रहेगा। इसका प्रभाव समाज के प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई देगा। कॉर्पोरेट संस्थानों, प्रशासनिक सेवाओं, उद्योग, शिक्षा और शोध संस्थानों में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व दोनों में वृद्धि होगी। जब शीर्ष स्तर पर महिलाएं अधिक संख्या में दिखाई देंगी, तो यह संदेश स्पष्ट होगा कि नेतृत्व केवल पुरुषों का क्षेत्र नहीं है। इससे संस्थागत संस्कृति में भी परिवर्तन आएगा और निर्णय अधिक समावेशी एवं संवेदनशील होंगे।

अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि महिला नेतृत्व वाले संस्थानों में पारदर्शिता, जवाबदेही और दीर्घकालिक स्थिरता बेहतर होती है। महिलाओं की बढ़ती भागीदारी केवल सामाजिक न्याय का विषय नहीं, बल्कि आर्थिक प्रगति का भी प्रमुख आधार है। यदि देश की महिला कार्यशक्ति को पूर्ण रूप से अवसर मिले, तो आर्थिक विकास की गति तेज हो सकती है, परिवारों की आय में वृद्धि हो सकती है और सामाजिक असमानताएं कम हो सकती हैं। वर्तमान में बड़ी संख्या में महिलाएं कार्यबल से बाहर हैं, जो इस बात का संकेत है कि देश की विशाल क्षमता अभी भी पूरी तरह उपयोग में नहीं आई है। महिला आरक्षण के माध्यम से भारत एक ऐसे युग में प्रवेश कर रहा है, जहाँ महिलाएं केवल भागीदारी नहीं करेंगी, बल्कि निर्णय प्रक्रिया का केंद्र बनेंगी। वे नीतियां बनाएंगी, संसाधनों का वितरण निर्धारित करेंगी, बजट तय करेंगी और समाज की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। यह परिवर्तन आने वाली पीढ़ियों के लिए एक नई सामान्य स्थिति स्थापित करेगा, जहाँ नेतृत्व में महिलाओं की भागीदारी स्वाभाविक मानी जाएगी। महिला आरक्षण एक कानून मात्र नहीं, बल्कि एक युग परिवर्तन का प्रतीक है। यह उस यात्रा का संकेत है, जहाँ यज्ञवेदी पर प्रतिष्ठित नारी शक्ति अब संसद और विधानसभा की प्रथम पंक्ति में बैठकर राष्ट्र का मार्गदर्शन करेगी। जब नई पीढ़ी की बेटियां इस परिवर्तन को देखेंगी, तो उनके भीतर यह विश्वास जागेगा – **मैं भी निर्णय ले सकती हूँ, मैं भी नेतृत्व कर सकती हूँ।** यही इस अधिनियम की सबसे बड़ी सफलता होगी। यह केवल महिलाओं का उत्थान नहीं, बल्कि भारत के भविष्य को सशक्त बनाने की दिशा में एक निर्णायक कदम है।

**–राखी राठौड़,**
**प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा**
**महिला मोर्चा**

# जीवन की धूल फांकने से बनता है लेखक – ममता कालिया

## हिन्दू कॉलेज में लेखक से भेंट का आयोजन

**दिल्ली।** जीवन में जो जितने अधिक धक्के खाता है, उतना ही अधिक और बेहतर लिख सकता है। जिसका जीवन गमले के पौधे के समान व्यतीत होता है, उसके पास लिखने को बहुत कम होता है तथा ऐसा व्यक्ति केवल अपने अंतर्मन की बातें ही लिख पाता है। साहित्य अकादेमी से सम्मानित प्रसिद्ध कथाकार ममता कालिया ने हिन्दू कालेज में हिंदी विभाग के वार्षिकोत्सव अभिधा 2026 में कहा कि पहले पिता की नौकरी के स्थानांतरण एवं फिर पढ़ाई के कारण उन्होंने अनेक शहरों की धूल खाई, हवा देखी, पानी पिया, स्वाद चखा, भाषाएँ बोलीं, जिन्होंने उनके लेखन क्रम में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उन्होंने अपनी चर्चित पुस्तकों कितने शहरों में कितनी बार तथा जीते जी इलाहाबाद की रचना प्रक्रिया के सूत्र बताते हुए कहा कि अपने जीवनानुभवों के साथ अपने परिवेश और आसपास के सामान्य जीवन को बारीकी से देखते हुए इनका सृजन हुआ है। कालिया ने युवाओं को अज्ञेय की मानक भाषा, जिसमें तत्सम शब्दों के साथ तर्क एवं अर्थ दोनों जीवन में खोल देते हैं, का अध्ययन करने को कहा। लेखन के लिए उन्होंने अनुभव, अनुभूति एवं कल्पना का सहारा लेने पर बल दिया। डायरी लेखन को लेखन की ओर आसानी से बढ़ने का साधन बताया क्योंकि डायरी में कभी-कभी ऐसे सुबोध वाक्य लिख जाते हैं जो आगे चलकर बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं। पुरानी डायरी पढ़ने पर उसमें अनेक नगीने मिलते हैं।

लेखक से भेंट शीर्षक से आयोजित इस कार्यक्रम में ममता जी ने अपने लेखन सफर का प्रारंभिक विवरण भी साझा किया और बताया कि उन्होंने सर्वप्रथम 1955 में बच्चों की कहानियों से लेखन आरंभ किया। उसके पश्चात् अजमेर से छपने वाली प्रसिद्ध पत्रिका लहर को याद किया जिसके सम्पादक प्रकाश जैन ने उनकी कविताएँ लगातार छापी थीं। विद्यार्थी जीवन की शरारतों को स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि शरारतों से ही कहीं लेखन निकलता है। उन्होंने कहा कि लेखन में सबसे पहले एक केंद्रीय चरित्र खड़ा किया जाता है, जिसमें वे सभी बातें डाल दी जाती हैं जो लेखक को खटकीं या अच्छी लगीं।

ममता कालिया

हिंदू कॉलेज आने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्होंने यहाँ व्यतीत अपने विद्यार्थी जीवन की यादें भी साझा कीं। ममता जी ने हिंदी की प्रख्यात लेखिका मन्नू भंडारी एवं उनके पति राजेंद्र यादव, जो हिंदी के विख्यात लेखक एवं संपादक थे, के साथ दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाने के दिनों को भी स्मरण किया। कालिया ने श्रोताओं के विभिन्न सवालों के जवाब भी दिए और उन्हें खूब पढ़ने की सलाह दी।

इससे पहले हिंदी विभाग के प्रभारी प्रो बिमलेन्दु तीर्थंकर ने शाल ओढ़ाकर ममता जी का स्वागत किया एवं हिंदी साहित्य सभा तथा अभिधा के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक शताब्दी से भी अधिक समय से हिंदी साहित्य सभा अपनी गतिविधियों से नयी पीढ़ी में साहित्य के संस्कार दे रही है। विभाग के शिक्षक डॉ पल्लव ने ममता कालिया का परिचय देते हुए कहा कि उनके लेखन की मुख्य विशेषता यह है कि वे भारतीय मध्यवर्ग के सामान्य जनजीवन को अत्यंत कुशलता से अपने लेखन में चित्रित करती हैं। वे किसी विचारधारा या वाद से आक्रान्त होकर नहीं लिखतीं बल्कि खांटी जीवनानुभवों को प्रगतिशील दृष्टि से लेखन में जगह देती हैं। डॉ. पल्लव ने कहा कि शहरनामा जैसी विधा को हिंदी में खड़ा करने में ममता जी का नाम लिया आजाएगा। शहर आधारित उनकी कृतियों का उल्लेख कर डॉ. पल्लव ने कहा कि इनमें वे स्मृतियों की पुनर्रचना ही नहीं कर रही थीं बल्कि कोई चाहे तो इसे भी संस्मरण की ही कृति मान सकता है लेकिन यहाँ ममता जी का जोर उस शहर के चरित्र को ध्यान में रखकर अपने अनुभव लिखने पर रहा। जीते जी इलाहाबाद इस रचना शृंखला की उच्चतम परिणति है जहाँ इलाहाबाद जैसे सांस्कृतिक शहर के चरित्र को लिखते हुए इसके भीतर वे अपने और अपने प्रियजनों के व्यक्तित्व की तलाश भी करती हैं। हिंदी में इस तरह की कृतियां बहुत अधिक नहीं मिलतीं और नयी शताब्दी में साहित्य की विधाओं में आ रहे बदलावों तथा अन्तर्क्रियाओं का भी श्रेष्ठ उदाहरण ममता जी का कथेतर लेखन बन गया है।

आयोजन के दूसरे भाग में अभिधा के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार ममता कालिया के हाथों दिए गए। इनमें आशु भाषण में प्रथम रामजस कॉलेज की आकृति महाजन, द्वितीय श्री वेंकटेश्वर कॉलेज के पुलकित भार्गव और तृतीय रामजस कॉलेज के आदित्य राज को प्रमाण पत्र व नगद राशि दी गई। काव्य पाठ प्रतियोगिता में प्रथम लेडी श्रीराम कॉलेज की कृष्णा पाठक, द्वितीय दिल्ली स्कूल ऑफ़ जर्नलिज्म के अंकित तथा तृतीय दौलत राम कॉलेज की प्रत्यक्षा शर्मा को पुरस्कार दिए गए।

इससे पहले ममता जी ने हिंदी विभाग की भित्ति पत्रिका अभिव्यक्ति के नए अंक का लोकार्पण भी किया। वे उस कक्षा कक्ष में भी गईं जहाँ उन्होंने अपनी पढ़ाई के दिनों में कक्षाएँ ली थीं।

अंत में आभार प्रदर्शित करते हुए विभाग की वरिष्ठ शिक्षिका प्रो रचना सिंह ने कहा कि ममता कालिया जैसे उदार और सरल साहित्यकारों का सान्निध्य नयी पीढ़ी को हमारी कला संस्कृति के अधिक निकट ले जाने में समर्थ होगा। कार्क्रम का संयोजन बृजलाला और दीक्षा शर्मा ने किया। आयोजन में प्रसिद्ध मीडिया विशेषज्ञ डॉ. वर्तिका नंदा साहित्य हिन्दू कालेज में राजनीति विभाग की प्रो सीमा दास, दर्शन शास्त्र के डॉ. शुभम ओझा, हिंदी विभाग की डॉ नीलम सिंह, डॉ. प्रज्ञा त्रिवेदी सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, विद्यार्थी और शोधार्थी उपस्थित रहे।

**–कैलाश सिंह राजपुरोहित,**
**संयोजक, हिन्दी साहित्य सभा,**
**हिन्दू कॉलेज, दिल्ली**

# बॉक्स हिल में आज भी रोमांटिक इंग्लिश देहाती चार्म है

## यात्रा संस्मरण.....

लंदन आये एक सप्ताह हो गया था। मगर तबियत कुछ अधिक अच्छी नहीं होने के कारण मैं घर से निकल नहीं पा रहा था। गुरुवार को बेटे सिद्धार्थ ने बताया धूप निकली है और तापमान भी 21 डिग्री है। घर के गार्डन में धूप और अच्छा मौसम देखकर घूमने का प्रोग्राम बनाया। हमारे घर से लगभग चालीस मिनट की ड्राइव पर बॉक्स हिल पहुंचे। हमारी बहुरानी सुष्मिता ने चेताया, पापा यहाँ के मौसम का कोई भरोसा नहीं है इसलिए गर्म कपडे साथ ले जाये। वही हुआ जैसे ही बॉक्स हिल पहुंचे, धूप गायब मिली। ठंडी हवाओं के झोंको ने हमारा स्वागत किया।

लंदन में पर्वतों की हसीन वादियों में अनेक ऐसे स्थान हैं जहाँ नैसर्गिक हरियाली और सुरम्यता पर्यटन के शौकीन लोगों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करते है। बॉक्स हिल लंदन में घूमने की पर्यटकों की पसंदीदा जगहों में से एक है। यह हाइकिंग, साइकिलिंग या बस कुछ घंटों के लिए ताज़ी हवा और शानदार नज़ारों के लिए शहर से बाहर घूमने के लिए एकदम सही है। शानदार वॉक और शानदार नज़ारों के लिए बॉक्स हिल प्रसिद्ध है। बॉक्स हिल, लंदन के साउथ-वेस्ट में सरे में है।

इसे नेशनल ट्रस्ट मैनेज करता है और यह इंग्लैंड के कुछ सबसे खूबसूरत देहाती रास्तों पर घूमने की शानदार और कुदरती जगह है। जगह जगह लकड़ियों के गठरों के सुन्दर ढेर है। इन पर चढ़कर पर्यटक अटखेलिया करते है। बताया जाता है बॉक्स हिल में आज भी वह रोमांटिक इंग्लिश देहाती चार्म है। यहां का सबसे पॉपुलर रास्ता बॉक्स हिल सर्कुलर वॉक है। यह एक मीडियम ट्रेल है जो आपको जंगलों, खुली पहाड़ियों और नदी किनारे के रास्तों से ले जाता है। यह रास्ता लगभग 7.5

किलोमीटर लंबा है और इसमें लगभग 230 मीटर की ऊंचाई है, और इसे पूरा करने में आमतौर पर 2 से 3 घंटे लगते हैं, यह रास्ता खूबसूरत जंगलों से होकर आगे बढ़ता है।

पतझड़ में, पेड़ सुनहरे हो जाते हैं और पक्षियों की आवाज़ सुनने और प्रकृति के बीच रहने का आनंद लेने के लिए एकदम सही जगह है। ऐसा लगता है जैसे प्रकृति ने यहाँ जम कर अपनी नैसर्गिक छटा बिखेरी है। जहाँ भी नजर जाये वहां आँखों को जबरदस्त सुकून मिलता है। प्रकृति की अदभुत सुंदरता मन और शरीर को शांति प्रदान करती है। हमने तीन किमी का रास्ता चुना और बच्चों के साथ फोटो खिंचवाते हुए प्राकृतिक नज़ारों का आनंद उठाया। बॉक्स हिल को 2012 लंदन ओलंपिक गेम्स की साइकिलिंग रोड रेस के हिस्से के तौर पर इंटरनेशनल पहचान मिली।

**–बाल मुकुन्द ओझा,**
**वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार।**

## राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

**बुधवार 15 अप्रैल, 2026**

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2083, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र दिन 3:23 तक, ब्रह्म योग दिन 1:25 तक, गर करण दिन 11:22 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 9:38 से मीन राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज भद्रा रात्रि 10:32 से आरम्भ होगी। आज प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि, पंचक, विगु और वैशाख विहु है।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:17 तक, शुभ 10:52 से 12:27 तक, चर 3:37 से 5:12 तक, लाभ 5:12 से सूर्यास्त तक।

**राहूकाल:** 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:07, सूर्यास्त 6:47

**मेष**
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक/व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

**वृष**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है।

**मिथुन**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**कर्क**
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

**सिंह**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

**कन्या**
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**तुला**
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

**वृश्चिक**
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

**धनु**
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

**मकर**
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**कुंभ**
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

**मीन**
मानसिक तनाव दूर होगा। मनःस्थिति में सुधार होगा। व्यक्तिगत प्रयासों से महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।